अजा एकादशी व्रत कथा PDF

पौराणिक काल में भगवान श्री राम के वंश में अयोध्या नगरी में चक्रवर्ती राजा हरिश्चंद्र नाम के एक राजा थे। राजा अपनी सत्यनिष्ठा और ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध थे।

एक बार देवताओं ने उनकी परीक्षा लेने की योजना बनाई। राजा ने स्वप्न में देखा कि उन्होंने अपना राज्य ऋषि विश्वामित्र को दान कर दिया है। प्रातःकाल विश्वामित्र सचमुच उनके द्वार पर आये और बोले, तुमने स्वप्न में मुझे अपना राज्य दान में दे दिया है।

राजा ने एक गंभीर प्रतिज्ञा का पालन करते हुए पूरा राज्य विश्वामित्र को सौंप दिया। दान दक्षिणा देने के लिए राजा हरिश्चंद्र को अपने पूर्व जन्म के कर्मों के फल के कारण अपनी पत्नी, पुत्र और स्वयं को बेचना पड़ा। हरिश्चंद्र को एक डोम ने खरीदा था जो श्मशान घाट में लोगों के दाह संस्कार का काम करवाता था।

वह स्वयं एक चांडाल का दास बन गया। उन्होंने उस चांडाल से कफन छीनने का काम किया, लेकिन इस आपत्तिजनक कार्य में भी उन्होंने सत्य को नहीं छोड़ा।

जब इसी तरह कई वर्ष बीत गए तो उसे अपने घृणित कृत्य पर बहुत दुख हुआ और वह इससे छुटकारा पाने का उपाय ढूंढने लगा। वह हमेशा इसी चिंता में रहता था कि मैं क्या करूँ? मुझे इस नीच कर्म से मुक्ति कैसे मिल सकती है? एक समय की बात है, वह इस चिन्ता में बैठा था कि गौतम ऋषि उसके पास पहुँचें। हरिश्चन्द्र ने उन्हें प्रणाम किया और अपनी दुःख भरी कहानी सुनाने लगे।

राजा हरिश्चंद्र की दुःख भरी कहानी सुनकर महर्षि गौतम भी बहुत दुखी हुए और राजा से बोलेः हे राजन! भादों मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम

अजा है। तुम विधिपूर्वक उस एकादशी का व्रत करो और रात्रि को जागरण करो। इससे तुम्हारे सारे पाप नष्ट हो जायेंगे।

इतना कहकर महर्षि गौतम अन्तर्धान हो गये। जब अजा नाम की एकादशी आई तो राजा हरिश्चंद्र ने महर्षि की सलाह के अनुसार विधिपूर्वक व्रत और रात्रि जागरण किया। इस व्रत के प्रभाव से राजा के सभी पाप नष्ट हो गये। उस समय स्वर्ग में नगाड़े बजने लगे और पुष्पों की वर्षा होने लगी। उन्होंने ब्रह्मा, विष्णु, महेश और देवेन्द्र आदि देवताओं को अपने सामने खड़ा पाया। उन्होंने अपने मृत पुत्र को जीवित और अपनी पत्नी को राजसी वस्त्रों और आभूषणों से सुसज्जित देखा।

व्रत के प्रभाव से राजा को अपना राज्य पुनः प्राप्त हो गया। दरअसल, यह सब एक ऋषि ने राजा की परीक्षा लेने के लिए किया था, लेकिन अजा एकादशी के व्रत के प्रभाव से ऋषि द्वारा रची गई सारी माया समाप्त हो गई और अंत में हरिश्चंद्र अपने परिवार सहित स्वर्ग चले गए।

जो मनुष्य नियमित रूप से इस व्रत को करते हैं और रात्रि में जागरण करते हैं, उनके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और अंत में उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होती है। इस एकादशी व्रत की कथा सुनने मात्र से अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

pdfinbox.com